मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता ।

दुनियां के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है ।

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 27 | सितम्बर 1990 | 50 पैसे

मार्क्सवाद

(दूसरी किश्त)

मार्क्सवाद मजदूर वर्ग का सिद्धान्त है। यह मजदूरों की क्रान्तिकारी प्रैक्टिस को सचेत तौर पर चलाने का औजार है मार्क्सवाद का आदि और अन्त क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन का विकास करना है।

आइये उपरोक्त पर कुछ विस्तार से चर्चा करें।

मेहनतकशों—गरीबों का हिस्सा है मजदूर। लेकिन मेहनतकश—गरीब काफी समय से समाज में मौजूद हैं जबकि मजदूर ढाई तीन सौ साल से ही समाज का एक उल्लेखनीय अंग बने हैं। मजदूरों की समाज में वजनदार भूमिका कारखानों के जन्म और खासकर उनमें भाप—कोयले के इस्तेमाल के साथ बनी है। यानि, पूंजीवाद के जन्म और विकास के साथ ही मजदूर सामाजिक जीवन में उभर कर आये हैं। और पूंजीवादी दमन—शोषण के खिलाफ मजदूरों के संघर्षों की सैद्धान्तिक अभिव्यक्तियों के सिलसिले में ही 1848 में कम्युनिष्ट घोषणा पत्र के प्रकाशन के साथ मार्क्सवाद का जन्म हुआ। पूंजीवादी दमन-शोषण से मजदूर वर्ग की मुक्ति मार्क्सवाद की धुरी है। पूंजीवादी व्यवस्था को दफना कर ही मजदूरों को दमन—शोषण से मुक्ति मिलेगी। और पूंजीवाद को दफनाने का मतलब है आज दुख–दर्द की जननी इस व्यवस्था को दफनाना। इस लिहाज से मजदूर वर्ग का मुक्ति-संघर्ष सब मेहनतकशों, सब गरीबों का भी मुक्ति-संघर्ष है। दमन-शोषण से झूठ और फरेब अनिवार्य तौर पर जुड़े हैं। अतः पूंजीवाद को दफन करना झूठ और फरेब को भी दफन करना होगा। इस लिहाज से मजदूर वर्ग का मुक्ति-संघर्ष पूंजी के नुमाइन्दों को भी झूठ फरेब की जकड़ से मुक्त करेगा इस प्रकार क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन सम्पूर्ण मानव जाति की मुक्ति का संघर्ष है। अतः मजदूर वर्ग का ही सिद्धान्त होते हुए भी भविष्य के हितों के दृष्टिकोण से देखने पर मार्क्सवाद "सब" का हित साधक है।

पूंजीवादी दमन-शोषण के खिलाफ मजदूरों के असन्तोष को कई बार पूंजीवादी गुट अपने–अपने हित में इस्तेमाल कर जाते हैं। कई बार मजदूर पूंजीवादी गुटों के झगड़ों में उलझ जाते हैं और इस प्रकार अपने हितों की बजाय किसी न किसी पूंजीवादी धड़े के हित में काम करते हैं। इसी प्रकार मजदूर कई बार अपने तात्कालिक हित के चक्कर में पड़कर सम्पूर्ण मजदूर वर्ग के हितों पर चोट करने वाले कदम उठा लेते हैं। वैसे, आमतौर पर मजदूरों के अलग-अलग हिस्सों के व तात्कालिक हित और सम्पूर्ण मजदूर वर्ग के दीर्घकालिक हित सांझे होते हैं। इसलिए मजदूर जब अपने हित में कदम उठाते हैं तब आमतौर पर मजदूरों के संघर्ष क्रान्तिकारी होते हैं। इसलिए मार्क्सवाद जहाँ मजदूरों के बीच से पूंजीवादी भ्रमों को उखाड़ने के लिए काम करता है वहीं मजदूरों के क्षुद्र हितों का विरोध करके सम्पूर्ण मजदूर वर्ग के हितों को पुष्ट करने के लिए भी काम करता है। और अलग-थलग चल रहे मजदूरों के क्रान्तिकारी आन्दोलनों के एकजुट हो कर शक्तिशाली क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के विकास के लिए मार्क्सवाद काम करता है।

क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन का विकास मार्क्सवाद का सर्वस्व है। इसलिए मार्क्सवादी वही है जिसका कार्य सचेत तौर पर किसी न किसी रूप में क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के विकास से जुड़ा हो।

क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के विकास के लिये वर्तमान के घटनाक्रम को समझना आवश्यक होता है। सामाजिक घटनाक्रम को समझने के लिये मार्क्सवाद इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या करता है। इसके बारे में चर्चा अगले अंक में करेंगे। [जारी]

—ओ

—o—

यूनिवर्सल में तालाबन्दी

मथुरा रोड स्थित यूनिवर्सल इंजीनियरिंग फौज के लिए बमों के फ्यूज आदि बनाती है। 30 अगस्त को मैनेजमेन्ट ने अचानक इस फैक्ट्री में लॉकआउट कर दिया।

मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के बीच एक छुट-मुट झगड़े को तालाबन्दी का कारण बताया है। पर सरसरी निगाह डालने पर ही मैनेजमेन्ट द्वारा बताया गया तालाबन्दी का कारण मात्र एक बहाना नजर आता है इसलिए आइये मामले को कुछ कुरेद कर देखें ताकि मैनेजमेन्ट की साजिश के खिलाफ उचित कदम उठाने में मजदूरों को मदद मिले।

काफी समय तक यूनिवर्सल इलैक्ट्रिक उर्फ इंजीनियरिंग की फौज को बमों के फ्यूज आदि सप्लाई करने में मनोपोली थी। चार सौ परमानेन्ट के साथ चार सौ कैजुअल वर्कर मौत के सामान के प्रोडक्शन में दिन-रात लगे रहते थे। यूनिवर्सल में ओवरटाइम और इन्सेंटिव आम बात थी। पर कुछ समय से हालात बदलने लगी थी। बम्बई, गुड़गाँव और पूना स्थित फैक्ट्रियां मौत का सामान बनाने में यूनिवर्सल से कम्पीटीशन में भारी पड़ने लगीं। यह तो हमें पता नहीं कि किसने किस जनरल या मन्त्री को मोटी रिश्वत दे कर आर्डर की बाजी मार ली पर हां, छह महीने से यूनिवर्सल इंजीनियरिंग को आर्डर न मिलने से हालत खस्ता है। इस पर पहला काम तो मैनेजमेन्ट ने यह किया कि 400 कैजुअल मजदूरों को गेट बाहर करके उन्हें हवा खा कर जिन्दा रहने के लिए आजाद कर दिया। फिर मैनेजमेन्ट ने ओवरटाइम और इन्सेंटिव बन्द करके परमानेन्ट मजदूरों को भी दाल में कुछ और पानी मिलाने की राह दिखाई। परमानेन्ट वर्कर के लिये फैक्ट्री में काम बहुत कम रह गया था पर फिर भी ढीले—ढाले ढंग से प्रोडक्शन चल ही रहा था। इस प्रकार हो रहे प्रोडक्शन से भी गोदाम भर गये और स्थिति यह हो गई कि चार महीने तक बिना कोई प्रोडक्शन किये मैनेजमेन्ट आर्डरों की पूर्ति कर सकती है। यह है वह वस्तुगत स्थिति जिसकी वजह से मैनेजमेन्ट के लिये तालाबन्दी करना जरूरी हो गया था। अतः कोई न कोई बहाना मैनेजमेन्ट ने लॉकआउट के लिये बनाना ही था। एस्कोर्ट्स से लाया गया नया जनरल मैनेजर कम्पनी के लिये फौज से आर्डर तो नहीं ला सका पर तालाबन्दी के लिए तिनका ढूंढ कर उसने यह जरूर दिखा दिया है कि झूठ-फरेब और पूंजीवादी कानूनी शब्दजाल में मैनेजमेन्ट कोई कमी नहीं छोड़ेगी।

इन हालात में यूनिवर्सल इंजीनियरिंग के मजदूरों को पूंजीवादी कानून के दलदल में धंस कर अपनी ताकत नहीं गवांनी चाहिए। कामजी घोड़ों पर भरोसा मजदूरों को अन्धी गली में फंसा देगा। कोर्ट-कचहरी की भाग-दौड़, इस-उस को रजिस्ट्रियां करने और फैक्ट्री गेट पर ताश खेलने जैसे कदमों में मजदूरों को अपना समय और शक्ति बर्बाद नहीं करनी चाहिये। यूनिवर्सल के मजदूरों को अपनी ताकत बढ़ाने के लिये पहले कदम के तौर पर हर रोज सुबह और शाम मथुरा रोड पर जलूस निकालने चाहिए। इस प्रकार हलचल बढ़ाकर यूनिवर्सल के मजदूर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को भी अपने आन्दोलन में जोड़ सकेंगे और पूंजीवादी तन्त्र में खलबली भी मचा सकेंगे। कानपुर के कपड़ा मजदूरों द्वारा रेलें रोक कर अपनी डिमाण्डें हासिल करने के उदाहरण से यूनिवर्सल के मजदूरों को सबक लेना चाहिए।

हमारी दिलचस्पी मौत के सामानों के प्रोडक्शन में नहीं है पर पूंजीवाद में इस तरह का प्रोडक्शन भी करना मजदूरों की मजबूरी है। मैनेजमेन्ट के खिलाफ कदमों के बारे में यूनिवर्सल इंजीनियरिंग के मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

—o—

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

मौत ही मौत

7 अगस्त को 24 सेक्टर की हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीज में गैस लीक से भड़की आग की चपेट में 7 वर्कर आ गये। जल जाने से पाँच की मौत हो गई। और दो अभी सफदरजंग में भर्ती हैं।

दो बार पहले भी इसी तरह इस फैक्ट्री में गैस लीक हुई थी पर मैनेजमेन्ट ने सुरक्षा के उपाय नहीं किये। 5 मजदूरों की मौत के बाद भी मैनेजमेंट का पुराना रुख बरकरार है। सुरक्षा के लिए आवश्यक परिवर्तन किये बिना 17 अगस्त से मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री से प्रोडक्शन चालू करवा दिया है। मजदूरों की मजबूरी है कि रोटी खानी है तो ऐसे खतरे उठायें।

यह हिन्दुस्तान इन्डस्ट्रीज नाम की किसी एक अकेली फैक्ट्री का ही किस्सा नहीं है। फरीदाबाद की हजारों फैक्ट्रियों में साफ-साफ देखा जा सकता है कि लागत कम करने के चक्कर में मैनेजमेन्टें सुरक्षा उपायों पर आवश्यक खर्च नहीं करती। मजदूरों के स्वास्थ्य और जीवन से खिलवाड़ पूंजीवाद में आम बात है।

नौकरी न मिले तो भूख से मरें और नौकरी मिल भी जाये तो काम करते समय हर वक्त मौत सिर पर मडराती रहती है। यह है मजदूरों की जिन्दगी। इसलिये जीवन, बेहतर जीवन के लिये मजदूरों द्वारा पूंजीवाद के खिलाफ क्रान्तिकारी आन्दोलन विकसित करना जरूरी है।

पूंजीवाद की मौत में ही मजदूरों की जिन्दगी है।

—o—

एक मजदूर का खत

नौकरी की तलाश

मैं एक पढ़ा-लिखा नौजवान मजदूर हूं। इन्टर करने के बाद मैं अपने भाई के पास फरीदाबाद चला आया। मेरा भाई एक फैक्ट्री में काम करता है मेरे भाई ने मुझे छः महीने का कम्प्यूटर कोर्स करवाया ताकि मुझे ढंग की नौकरी मिल सके पर मुझे काम नहीं मिला। काफी दिन बैठे हो गये तब इधर-उधर की सिफारिश करवा कर मैं एक फैक्ट्री में कैजुअल वर्कर लगा। वहाँ मैंने जिंक प्लेटिंग का काम सीखा पर 5 महीने बाद मुझे काम से निकाल दिया गया क्योंकि कम्पनी ने पाँच महीने से ज्यादा किसी कैजुअल वर्कर को न रखने का नियम बना रखा है।

मैं फिर से सड़क पर हूँ और इधर-उधर काम की तलाश में भटक रहा हूँ। फैक्ट्रियों में काम लगता न देख कर मैंने वर्कशापों के चक्कर लगाने शुरू किए है पर तनखा की बात सुनते ही माथा चकरा जाता है। एक वर्कशाप में मुझे 350 रुपये महीने पर काम करने को कहा गया तो दूसरी में 450 रुए पर। वैसे हरियाणा सरकार के कानून के मुताबिक अकुशल श्रमिक का न्यूनतम बेतन 830 रुपये महीना है। समझ में नहीं आता कि क्या करूं। ऐसे कब तक चलेगा ?

—रामतीरथ

—o—

पढ़िये और पढ़ाइये

सचेत मजदूर का
क-ख-ग

निर्जीव से जीव-पशु से मानव-भारत में मानव-आदिम साम्यवादी समाज-स्वामी समाज-भारत में जातियां-सामन्तवाद-सरल माल उत्पादन-विश्व मन्डी-पूंजीवादी माल उत्पादन-पूंजी और भारत में पूंजी-कांग्रेस पार्टी और मोहनदास करमचन्द गाँधी-गाँधीवाद नेहरूवाद-पूंजी आज-सचेत मजदूरों के कार्यभार।

50 पेज 5/—

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, फरीदाबाद-121001 से डाक द्वारा मगवा सकते हैं।

PUBLISHED

ROSA LUXEMBURG'S 'THE ACCUMULATION OF CAPITAL', an abridged version with an Introduction by KAMUNIST KRANTI.

250 pages 30/-

Majdoor Library, Autopin Jhuggi, Faridabab-121001

घातक हवाई गोले

आरक्षण विरोध—आरक्षण समर्थन

जो मुद्दे नहीं हैं उन्हें महत्वपूर्ण सवाल बताना पूंजीवादी राजनीति का रोजमर्रा का काम है——खासकर पूंजीवादी जनतन्त्रों में हवाई गोले दागना पूंजीवादी राजनीतिज्ञों की दिनचर्या है। पूंजीवादी पत्र-पत्रिकायें इस प्रकार की सामग्री से भरे रहती हैं। पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते सकट की वजह से बढ़ते सामाजिक असन्तोष के मूल कारणों को छूने तक की क्षमता पूंजीवादी राजनीति में नहीं है इसलिए पूंजीवादी राजनीतिज्ञों द्वारा दागे जाने वाले हवाई गोलों की पोल खुलने में आमतौर पर ज्यादा समय नहीं लगता। पर पूंजीवादी राजनीति द्वारा दागे जाने वाले कुछ हवाई गोले घातक असर लिए होते है, थोथे होते हुए भी यह समाज में दीर्घ काल तक बनी रहने वाली आत्मघाती बदबू फैलाते हैं। धर्म, भाषा, जाति, इलाका, देश आदि के नाम पर पूंजीवादी राजनीति द्वारा खड़े किए जाने वाले बखेड़े इस प्रकार के घातक हवाई गोले हैं। आइये आरक्षण विरोध और आरक्षण समर्थन के नाम पर भारत में आजकल पूंजीवादी राजनीति द्वारा दागे जा रहे घातक हवाई गोलों पर थोड़ा गौर करें।

इस समय भारत में पूंजीवादी जनतन्त्र का नाटक नौटंकी की स्थिति में प्रवेश कर गया है। लोकप्रिय होने की बदहवास होड़ में हर पूंजीवादी राजनीतिज्ञ हाथ-पैर मार रहा है। इसी सिलसिले में आरक्षण के जिनके के जरिए चुनावी वैतरणी पार करने की तिगड़म सामने आई है। पूंजीवादी राजनीतिज्ञों द्वारा दागे जा रहे अन्य हवाई गोलों की ही तरह यह भी एक हवाई गोला ही है पर बेरोजगारी के भय से त्रस्त छात्रों के एक हिस्से के अन्धे आक्रोश की बड़े पैमाने पर अभिव्यक्ति ने मामले को नये रंग दे दिए हैं। आरक्षण समर्थन के साथ-साथ आरक्षण विरोध की पूंजीवादी राजनीति पूरे योवन पर आ गई है। दोनों पक्ष इधर-उधर की ढेरों दलीलें दे रहे हैं पर दोनों तरफ भीड़ को जुटाने वाला मुख्य मसाला सरकारी नौकरियां और उनके अत्यधिक महत्व की होने में विशाल आबादी का विश्वास है। आइये इस पहलू पर थोड़ा गौर करें।

पूंजीवाद के विकास के साथ स्थिति कुछ इस प्रकार की बनती है : दस हजार लोगों को अगर नौकरी की तलाश होती हैं तो डंडे मारने वालों गोली चलाने वालों जैसी नौकरियाँ जोड़ कर भी यह व्यवस्था एक सौ नौकरियां ही प्रदान कर सकती है। दस हजार में से नौ हजार नौ सौ के लिए इस व्यवस्था में कोई स्थान नहीं हैं। ऐसे में एक सौ स्थान की बन्दरबांट को महत्व प्रदान करना ना समझी का प्रदर्शन करना है। एक सौ में से एक सौ का आरक्षण हो चाहे बिल्कुल आरक्षण न हो, दस हजार में से नौ हजार नौ सौ को इस व्यवस्था में नौकरी नहीं मिलेगी। जाहिर है कि आरक्षण विरोध और आरक्षण हवाई गोले हैं। लेकिन यह हवाई गोले घातक बन गये हैं क्योंकि सड़क की खाक छान रहे नौ हजार नौ सौ के एक हिस्से में यह भ्रम हैं कि उन्हें नौकरी न मिलने का कारण आरक्षण का होना है तो दूसरा हिस्सा आरक्षण के लागू न होने को अपनी बेरोजगारी का कारण मानता है। इससे नौ हजार नौ सौ बेरोजगार आपस में उलझ जाते हैं और उनके दुख-दर्द की जननी इस पूंजीवादी व्यवस्था के प्रतिनिधि ही उनके चौधरी बन जाते हैं।

इस सन्दर्भ में मुद्दे की बात यह है कि हर देश में, सम्पूर्ण दुनियां में बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। इसके मूल में पूंजीवादी व्यवस्था का गहराता संकट है—— हर पूंजीवादी धड़ा कम लागत पर अधिक उत्पादन वाली जिन्दगी और मौत की दौड़ में जुता है। हर देश में बेरोजगारी का बढ़ना तो इस दौड़ का आवश्यक परिणाम है। इसीलिए पूंजीवादी विश्व व्यवस्था को दफना कर ही मानव जाति बेरोजगारी जैसी समस्याओं से मुक्त हो सकती है।

आरक्षण विरोध और आरक्षण समर्थन वाली पूंजीवादी दलदल से निकल कर, पूंजीवादी व्यवस्था को दफनाने के लिए क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन को विकसित करना ही बेरोजगारी की घुटन से मुक्ति की राह है।

-o-

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गाँ. मेमो. न. से मुद्रित